नेतन्याहू की चुनौती भरी एक और पारी

पुष्परंजन

पूर्वाग्रह अनुमान आधारित होता है। प्रधानमंत्री के प्रिय नेताओं को लेकर एक धारणा बन गई थी कि उनके कई करीबी मित्रों की सत्ता चली गयी। नेतन्याहू, ट्रंप से लेकर शिंजो आबे तक तमाम नाम उस सूची में रहे हैं। जब ये ख़बर आई कि इस्राइली चुनाव में बीबी निक नेम से मशहूर बेंज़मिन नेतन्याहू जीत रहे हैं, तो सबसे पहले यही बात समझ में आई कि पूर्वाग्रहों की आयु लंबी नहीं होती है। मगर, उसके पलटवार में मोदी के शैदाई कहने लगे हैं कि नेतन्याहू की सत्ता में वापसी हुई है, तो ट्रंप भी भारी बहुमत से लौटेंगे।

इस परिणाम से सबसे अधिक कोई प्रफुल्लित है, तो वह हैं प्रधानमंत्री मोदी। मोदी और बीबी की जोड़ी विश्वविख्यात रही है। 2 जून, 2021 में जब इस्राइल में आम चुनाव हो रहा था, बेंजमिन नेतन्याहू ने अहद किया था कि जीतते ही भारत का दौरा करूंगा। यह अरमान उन दिनों परवान नहीं चढ़ पाया था। यों, 14 जनवरी, 2018 को छह दिनों की यात्रा पर नेतन्याहू दिल्ली आये थे। 2003 के बाद किसी इस्राइली प्रधानमंत्री की यह पहली भारत यात्रा थी। पिछले आठ वर्षों में दोनों देशों के बीच दक्षिणपंथी विचारधारा के स्तर पर 'पीपुल टू पीपुल कान्टेक्ट' काफी हुआ, उभयपक्षीय रणनीतिक हिस्सेदारी में भी तेज़ी आई।

2 जून, 2021 के बाद जो परिणाम आये, उसमें आठ घटक दलों की सरकार इस्राइल में बनी। सहयोगी दलों के शिखर नेताओं ने बारी-बारी से प्रधानमंत्री बनने का फार्मूला स्वीकार किया था। नई सरकार में यामिना पार्टी के प्रमुख, नेफ्ताली बेनेट को सितंबर, 2023 तक प्रधानमंत्री पद संभालना था, उसके बाद याइर लापिड नवंबर, 2025 तक पीएम की जिम्मेदारी देखते। यह फार्मूला उस समय भी व्यावहारिक रूप से सफल होता नहीं दिख रहा था। 13 जून, 2021 को नेफ्ताली बेनेट प्रधानमंत्री बने, मगर 30 जून, 2022 तक ही सरकार चला पाये।

6 जून, 2022 को वेस्ट बैंक वाले इलाके में ज़मीन-मकान के मामले में यहूदियों को फायदा पहुंचाने वाले 'सेटलर लॉ' को विस्तार देने संबंधी प्रस्ताव 58 और 52 के अंतर से संसद में गिर गया। तब गठबंधन में शामिल अरब राम पार्टी के दो सांसद और वामपंथी मेरेत्ज़ पार्टी के एक सांसद ने प्रस्ताव के विरुद्ध वोट किये थे। यदि इस पर वहां की संसद, 'क्नेसेट' की मुहर लग जाती, तो लगभग पांच लाख इस्राइली मूल के लोगों को लाभ पहुंचता। वेस्ट बैंक और पूर्वी जेरूसलम में 250 ऐसे सेटलमेंट हैं, जहां 6 लाख 83 हज़ार 553 लोग आशियाना स्थाई करने के वास्ते सत्तर के दशक से लड़ाई लड़ रहे हैं। फिलस्तीनी पक्ष का कहना है कि इन लोगों का कब्ज़ा ही अवैध है। इस्राइल की राजनीति में आशियाना और आबोदाना बड़ा मुद्दा रहा है, जो वहां की दक्षिणपंथी विचारधारा के

लिए ईंधन का काम करता है। 6 अप्रैल, 2022 को ही सेक्युलर गठबंधन सरकार अल्पमत में आ गई, जब यामिना पार्टी की सांसद इदित सिलमन ने अपने को सरकार से अलग कर लिया। वेस्ट बैंक में फिलस्तीनियों को मारने और अल अक्सा मस्जिद परिसर में कहर ढाने के कारण यूनाइटेड अरब लिस्ट जैसी पार्टी ने भी गठबंधन से हाथ खड़े कर दिये। संसद में कई विधेयकों के पास नहीं होने से आज़िज आकर तब के प्रधानमंत्री नेफ्ताली बेनेट ने 20 जून को संसद (क्नेसेट) भंग करने का प्रस्ताव रख दिया था। यह प्रस्ताव 30 जून को अनुमोदित हो गया, और 1 जुलाई, 2022 को चुनाव तक याइर लापिड को कार्यकारी प्रधानमंत्री बने रहने की ज़िम्मेदारी सौंप दी गई। याइर लापिड ने 2012 में इस्राइल की मध्यमार्गी पार्टी 'यश आतिद' का गठन किया था। याइर लापिड की पार्टी, 'यश आतिद' को सेक्युलर मिडल क्लास के पैरोकार के रूप में पहचान मिली है।

कहने को इस्राइल में सेक्युलर सरकार चल रही थी, दरअसल पहले राउंड में सत्ता की कमान उस व्यक्ति के हाथों में दी गई थी, जिसका अतीत बताता है कि वह बेंजमिन नेतन्याहू से चार क़दम अधिक धुर दक्षिणपंथी रहा है। न्यू राइट पार्टी के नेता नेफ्ताली बेनेट कभी बेंजमिन नेतन्याहू के काफी क़रीबी माने जाते थे। 2013 से 2019 तक वे डायसपोरा मामलों के मंत्री रहे, उसके प्रकारांतर 2020 तक नेफ्ताली ने प्रतिरक्षा मंत्रालय भी संभाला था। गृहमंत्री रहते अरबों और फिलस्तीनियों पर कहर बरपाने की वजह से नेफ्ताली बेनेट कुख्यात हुए थे। वही इंसान प्रधानमंत्री के रूप में सभी दल-जमात के लोगों को लेकर सरकार चला लेगा, इसे लेकर पहले दिन से ही विश्लेषक शक करने लगे थे।

गुरुवार देर रात जो चुनाव परिणाम आये, उसे देखकर हम यह भी नहीं कह सकते कि नेतन्याहू कैंप को 'लैंड स्लाइड विक्टरी' मिली है। 120 सीटों वाली संसद 'क्नेसेट' में लीकुड, यहूदीवादी शास और यूनाइटेड तोराह जूडिजम जैसे दक्षिणपंथी गठबंधन को 64 सीटें हासिल हुई हैं। यानी प्रतिपक्ष केवल चार सीटों से पीछे रहा है। इस्राइल की 65 सदस्यीय नई गठबंधन सरकार में 40 ऐसे सांसद नज़र आयेंगे, जो रूढ़िवादी यहूदी हैं। चार पार्टियों की गठबंधन सरकार में तीन तो घोषित रूप से आर्थोडॉक्स हैं। इनमें सेफार्डिक यहूदियों की समर्थक शास पार्टी, जो सियासत में औरतों की भागीदारी नहीं चाहती, दूसरा रोमन साम्राज्य के सपने देखने वाली अश्केह-नाजी यहूदियों की 'यूनाइटेड तोराह जूडिजम' और तीसरी पार्टी का नाम है, 'रिलीजिस ज़ियोनिजम' जिसके नेता हैं राब्बी मेइर कहाने, इन तीनों से नेतन्याहू की लीकुड पार्टी की कितनी बनती है? इस सवाल को अभी भविष्य पर छोड़ देते हैं।

इस चुनाव में सबसे बड़ा नुकसान महिला प्रतिनिधियों का हुआ है। 65 सीटों की गठबंधन सरकार में महिला सांसद केवल 12.31 फीसद होंगी, यह वहां के सभ्य से दिखने वाले समाज पर सवाल खड़े करता है। केवल आठ महिला सांसद सत्ता पक्ष में, जिनमें लीकुड पार्टी की पांच और बाक़ी तीन रिलीजियस ज़ियोनिजम (त्कुमा से प्रख्यात) पार्टी की महिलाएं हैं। पिछली नेफ्ताली बेनेट-याइर लापिड गठबंधन सरकार में 24 महिला सांसदों के अलावा कैबिनेट में सात महिलाओं को जगह दी गई थी। यह दिलचस्प है कि इस्राइल में महिलाएं 50.19 प्रतिशत हैं, और पुरुष 49.81 प्रतिशत। पुरुषों के मुकाबले लगभग 34 हज़ार अधिक महिलाएं जिस देश में हों, वहां संसद में उनके प्रतिनिधित्व की स्थिति देखकर लगता है कि राजनीतिक रूप से कितना बंद समाज है। क्या भारतीय राजनीति की पाठशाला में इनसे सबक लेना चाहिए? नेतन्याहू सत्ता में लौटने के बाद एक बार फ़िर भारत आएंगे। 1992 में जो उभयपक्षीय व्यापार 20 करोड़ डॉलर का था, 2021-22 में बढ़कर 7 अरब 86 करोड़ डॉलर का हो चुका है। बीबी और मोदी की जोड़ी इसे और आगे बढ़ायेगी, निश्चिंत रहिये।

चित्रकूट, में बाघों का स्वागत है..!

मुकुंद

भगवान श्रीराम की तपोभूमि चित्रकूट बाघों के स्वागत के लिए जल्द तैयार होगी। दुनिया में सफेद शेरों की राजधानी के रूप में विख्यात मध्य प्रदेव के रीवा को इसी चित्रकूट जिले की सीमा मानिकपुर से कुछ दूर पर छूती है। मानिकपुर का %पाठा% पानी के अभाव और दस्युओं के लिए कुख्यात रहा है। इनकी बर्बरता की वजह से उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड के चित्रकूट के इसी %पाठा% को संसार %मिनी चंबल% भी कह चुका है। रीवा में साल 2016 में सफेद बाघों का दुनिया का पहला अभयारण्य आबाद हो चुका है। अब केंद्र सरकार ने रानीपुर टाइगर रिजर्व की घोषणा की है। यह इसी पाठा का अभिन्न हिस्सा होगा। अब रानीपुर वन्यजीव विहार बंदूकों की तड़तड़ाहट से नहीं, बाघों की दहाड़ से गूंजेगा। यह उत्तर प्रदेश सरकार की बड़ी पहल का नतीजा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में गठित उत्तर प्रदेश राज्य वन्यजीव बोर्ड ने रानीपुर को प्रदेश का चौथा टाइगर रिजर्व बनाने की परियोजना को मंजूरी देते हुए आदिवासी बहुल गांव बहिलपुरवा में रेस्क्यू सेंटर बनाने की घोषणा की थी। करीब 600 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र के रानीपुर वन्यजीव विहार के जंगल की देखरेख अब तक मीरजापुर का कैमूर वन्यजीव प्रभाग करता था। अब यहां की देखरेख चित्रकूट वन प्रभाग करेगा। टाइगर रिजर्व अधिसूचना जारी होने की पहली सूचना केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने ट्वीट कर दी। रानीपुर टाइगर रिजर्व भारत का 53 वां टाइगर रिजर्व है। प्रभागीय वनाधिकारी आरके दीक्षित खुशी जाहिर करते हुए कहते हैं कि इस रिजर्व में तपोभूमि के पूरे जंगल चित्रकूट वन प्रभाग से समाहित हो गए हैं। प्रभागीय वनाधिकारी ही इस रिजर्व का उप निदेशक होगा। भूपेंद्र यादव ने इसे बाघ संरक्षण की दिशा में सार्थक पहल करार दिया है।

यहां सबसे महत्वपूर्ण यह है कि रानीपुर देश का एकमात्र रिजर्व है जिसमें एक भी बाघ का स्थाई निवास नहीं है। बावजूद इसके यह बाघों की आवाजाही का महत्वपूर्ण गलियारा है। यह मध्य प्रदेश के बाघों के लिए आदर्श आवाजाही और पड़ाव मार्ग है। रानीपुर वन्यजीव विहार की स्थापना 1977 में हुई थी। इसका मकसद स्थानीय स्तर पर विचरण वाली वन्यजीव आबादी को सुरक्षित स्थान देना और अपनी तरह के अनोखे वन क्षेत्र की संरक्षण करना था। अब बाघों को मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर रिजर्व में पानी भरने की स्थिति में चित्रकूट की पहाड़ियों में सुरक्षित और स्थायी निवास मिल सकेगा। इसकी वजह यह है कि यह पूरा इलाका ऊष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन है। यहां बड़े संख्या में भालू, चित्तीदार हिरण, सांभर, चिंकारा के अलावा तेंदुए आदि विचरण करते हैं।

भारत में पिछले दो दशक से बाघ संरक्षण पर ठीक-ठाक काम हुआ है। संभवत: इसी का नतीजा है कि देश में पिछले आठ साल में बाघों की संख्या दोगनी हो गई है। हाल ही में हुई बाघों की गणना में यह साफ हुआ है। इस समय देश में बाघों की संख्या 2967 है। यह विश्व की बाघों की आबादी का 75 फीसद है। इस बाघ गणना को अपने अनोखे अंदाज और प्रमाणिकता के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज किया गया है। देश में 1973 में सिर्फ नौ टाइगर रिजर्व थे। अब इनकी संख्या 53 है। इस समय मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा 526 बाघ हैं। यह संख्या देश के किसी भी राज्य के मुकाबले सबसे अधिक है। रानीपुर टाइगर रिजर्व के बन जाने से पन्ना टाइगर रिजर्व के बाघों को विचरण के लिए लंबा विस्तार मिलेगा और उन्हें संरक्षित करने में मदद मिलेगी। बाघ संरक्षण के लिए केंद्र सरकार भी कुछ ज्यादा गंभीर नजर आ रही है। तभी तो बजट आवंटन में बाघ संरक्षण के लिए 300 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। रानीपुर रिजर्व के पांच किलोमीटर दायरे में करीब 1.19 लाख की आबादी है। इसमें 60 फीसदी अनुसूचित जाति के हैं। यहां के जंगलों में तेंदू पत्ता, जड़ी बूटी, आंवला, बेल, महुवा आदि की पैदावार अधिक होती है। इस रिजर्व के आसपास मरविया देवी मंदिर, बेधक, धारकुंडी आश्रम, हनुमान धारा, सती अनसुइया आश्रम हैं। रानीपुर टाइगर रिजर्व का निदेशालय चित्रकूट जिले के मुख्यालय कर्वी में होगा। कुछ साल पहले इन्हीं धार्मिक केंद्रों के आसपास बाघों को विचरण करते देखा जा चुका है। रिजर्व बन जाने से यहां के जंगल वन्य प्राणियों से गुलजार होंगे। तब सरकार को शिकारियों पर पैनी नजर रखनी होगी।

इंटरनेट के युग में बाजार से गायब होतीं किताबें

आचार्य प्रशान्त

पिछले पाँच-सात सालों में किताबों की कुछ श्रेणी ही गायब हो गई है बुकस्टोर से

दर्शन शास्त्र और स्प्रिचुएलिटी सेक्शन (आध्यात्मिक खण्ड) एकदम पतला हो गया है। और दूसरी चीज़ ये निकल कर आई कि ज़्यादा जो आजकल किताबें बिक रही हैं, वो हल्की-फुल्की हैं, मनोरंजन, एंटरटेनमेंट की दुनिया से हैं। आज से तीस-चालीस साल पहले ऐसा नहीं होता था। बुकस्टोर मंदिर जैसा होता था और बुकस्टोर में जाओ तो वहाँ पर अध्यात्म की, दर्शन की, तमाम तरह के अच्छे साहित्य की पुस्तकें रहती थीं, अभी वो सब नहीं हैं।

अभी आप अगर किताबों की दुनिया में देखेंगे तो वहाँ हालत ये है कि वहाँ लेखक को नहीं पढ़ा जाता। वहाँ पहले आपको एक सेलिब्रिटी होना चाहिए, वो भी अधिकांशत: मनोरंजन की ही दुनिया से, जिसमें खेल और सिनेमा वगैरह आ गए, और फ़िर आपकी किताब छपेगी तो वो किताब पहुँच जाती है बुकस्टोर पर।और आप बुकस्टोर पर जाएँगे तो वहाँ पर आपको तस्वीरें दिखाई देंगी उन लोगों की जिनकी किताबें आजकल बिक रही हैं, वहाँ तस्वीरें आपको लेखकों की नहीं दिखाई देंगी। आज के अच्छे लेखक कौन हैं, इसका तो बहुत कम लोगों को नाम भी पता हो। बहुत कम लोगों को पता होगा। अगर पूछा जाए कि आज भारत में या विश्व में आप शीर्ष पाँच-दस अच्छे लेखकों के नाम बता दीजिए, जो विशुद्ध लेखक मात्र हैं, आप नहीं बता पाएँगे। तो बुकस्टोर पर आप तस्वीरें भी किसकी लगी हुई देखते हैं? वहाँ आप देखेंगे कि सिने एक्ट्रेसेस (फ़िल्मी तारिकाएँ) हैं जो बता रही हैं कि प्रेगनेंसी (गर्भावस्था) कैसे हैंडल करनी चाहिए। कोई बता रही है कि उसने किस तरीके से दो-चार शादियाँ करी या बिना शादी करे ही क्या करा।

वैसी किताबें बाहर बिलकुल डिस्प्ले में लगी हुई होंगी कि आपको बाहर से देखने पर लगेगा ही नहीं कि ये किताबों की दुकान है। वो आपको लगेगा कि ये बॉलीवुड का कोई शो रैक है, जिसमें बॉलीवुड वाले नहीं तो क्रिकेटर होंगे, नहीं तो राजनेता, राजनेता नहीं होंगे तो उनकी बीवियाँ होंगी या पूर्व-पत्नियाँ होंगी। ऐसे लोग होंगे जिनके नाम आप पहले से जानते हैं। जिनका लेखन से, साहित्य से कोई ताल्लुक़ नहीं है। वो किसी और वजह से उनके नाम आप जानते हैं, तो फिर वो किताबें लिख रहे हैं जिनको आप पढ़ने पहुँच जाते हो। जैसे कि अगर कोई बहुत अच्छी आइटम गर्ल थी तो अब वह एक बहुत गहरी लेखिका बन जाएगी। जैसे कि कोई एक पुराना क्रिकेटर है, वह किताब लिखे आप उसको बहुत पसंद करते हैं।

बुकस्टोर्स पर तो आपको बड़ा मुश्किल होगा कि रमण महर्षि और कृष्णमूर्ति की किताबें मिल जाएँ। डेरिडा और शोपेनहौर, तो वो तो बहुत दूर की बात है। थोड़े जाने-पहचाने नामों की बात कर रहा हूँ, ये भी नहीं मिलेंगे अब बुकस्टोर्स में। पोएट्री सेक्शन (कविता खण्ड) ही ख़त्म हो गया। कवि अब जैसे कि होते ही नहीं। नहीं, वो जो टीवी पर आते हैं, उन्हें कवि नहीं कहते, वो भांड हैं। वो जो तुकबंदी करते हैं राजनेताओं के इर्दगिर्द, वो कवि नहीं कहलाते हैं, वो भले ही अपने आपको बोल दें कि हम कवि हैं। आज कहाँ कोई निराला, कोई अज्ञेय, कोई धूमिल? आज कहाँ है कोई पंत, कोई महादेवी? मुक्तिबोध के आसपास फटकने लायक भी है आज का कोई युवा कवि? और इसमें कवियों को क्या दोष दें?

आज से तीस-चालीस साल पहले ऐसा नहीं होता था। ऐसा इसलिए नहीं होता था क्योंकि तब जो फिल्में बनती थीं, उनमें जो कैरेक्टर्स (चरित्र) होते थे वो फिर भी ज़मीन से थोड़े जुड़े हुए कैरेक्टर्स होते थे, हमारे आसपास के होते थे। जैसे ऋषिकेश मुखर्जी की आप फिल्में ले लीजिए, बिलकुल आपको ऐसा लगेगा कि जो पड़ोस के घर में रामू रहता है, उसी को लेकर के फ़िल्म बना दी गई है, आज जो फिल्मों में करैक्टर आते हैं, आपने देखा है पंचानवे में आई थी दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे, उसके बाद से अधिकांश फिल्मों में, अधिकांश नहीं तो भी एक बड़ी तादात में जो मूवी है, उसमें जो लीड कैरेक्टर्स होते हैं वो एनआरआई होते हैं। सब बैनर्स (फ़िल्म कम्पनियाँ) ने ऐसा करा है,

यह बात हमें समझ में नहीं आती क्योंकि ये बात हमारे अंदर-अंदर चल रही होती है और हमारा आत्मवलोकन इतना गहरा होता नहीं कि हम समझ पाएँ कि हमारे मन को वो एक्टर क्यों अच्छा लग रहा है। आपके भीतर लालच को प्रोत्साहित किया गया है। और ये सब लोग जो अभी बुकस्टोर से लेकर घरों के ड्राइंग, बेडरूम तक छा गए हैं, ये सब बहुत गिरे हुए वैल्यू सिस्टम के प्रतिनिधि हैं। क्या वैल्यू सिस्टम? जिसमें मन का उथलापन है, जिसमें अध्यात्म के लिए कोई जगह नहीं है, जिसमें पैसे का नंगा नाच है, जिसमें आदमी ऐसा होता है जो लुच्चा सेक्सुअलिटी के आगे घुटने टेक दे।आपने कहा कि फिलोसॉफी, स्प्रिचुअलिटी सेक्शन बुकस्टोर से गायब हो रहे हैं। वो तो होंगे न, क्योंकि अगर आपमें धर्म या दर्शन की समझ आ गई तो आपके लिए कंज़म्पशन (भोग) मुश्किल हो जाता है। और अगर कंज़म्पशन ही आपका आदर्श बन गया है, तो आप बिलकुल नहीं देखना चाहेंगे किसी प्लेटो की ओर, किसी निसर्गदत्त की ओर। आप क्यों देखना चाहेंगे इनकी ओर? क्योंकि ये तो आपको आपकी हक़ीक़त से रूबरू कराते हैं। तो इनकी किताबें फिर बुकस्टोर से गायब हो रही हैं। कोई बिलकुल आपको ताज्जुब नहीं होना चाहिए कि आज का कोई घटिया सा इंफ्लुएंसर, दो कौड़ी का कोई यूट्यूबर कल बेस्ट सेलिंग ऑथर हो जाए। यही होने वाले हैं कल के बेस्ट सेलिंग ऑथर क्योंकि दर्जनों मिलियंस में इनके फॉलोवर्स हैं, आज अगर ये किताब लिख दें तो वो किताब एक झटके में बेस्ट सेलर हो जाएगी।

दूसरा तरीका ये है कि कोई फिल्मी एक्टर किताब लिख दे और उसके बारे में बस इतना बता दे कि मैंने इस किताब में अपने अंतरंग संबंधों का खुलासा कर दिया है, मैंने इस किताब में बता दिया है कि मैं किसके-किसके साथ सोया, ख़ासतौर पर किस-किस की बीवी के साथ, वो किताब ऐसी बिकेगी कि पूछिए मत। क्योंकि हमको चेतना के इतने निचले तल पर लाकर खड़ा कर दिया गया है कि हमको बस अब यही चीज़ें पसंद आ रही हैं।लेखक होना अब आज के समय में संभव नहीं रहा। साहित्यकार होना अब संभव नहीं रहा, आप भूखे मरोगे। कवि होने की तो आप बात ही छोड़ दीजिए। जब संस्था की किताब आई थी %कर्म%, तो हम भी गए थे आस-पास के बुकस्टोर्स पर। एक चीज़ देखने को मिली कि हिंदी का जो सेक्शन (खंड) है, वो पूरे बुकस्टोर्स के एक प्रतिशत से भी कम है, और ऐसा एक-दो में नहीं, सब में था कि आपको वहाँ पर हिंदी किताबें तो मिलेंगी ही नहीं। तो अब हालत ये है कि दर्शन, अध्यात्म के साथ-साथ अब हिंदी किताबें भी आपको नहीं मिलेगी, इंग्लिश-इंग्लिश ही मिले।

कुछ बात है ऐसी कि घटिया साहित्य विशेषकर अंग्रेजी में ही रचा जाता है। और आपको घटिया नशे की लत लग गई है तो आपको हिंदी में मिलना मुश्किल होता है। घटिया नशा किसी भी भारतीय भाषा में मिलना थोड़ा मुश्किल पड़ेगा। दूसरी बात, जो लोग ये घटिया नशा सप्लाई करते हैं किताबों के माध्यम से, वो भी एक घटिया नशा है, वो कहने को किताब है पर वो सस्ता नशा है, कुछ उनका भी तो स्टैंडर्ड होता है, वो गरीबों की भाषा हिंदी में कैसे लिख देंगे! इतनी बड़ी अदाकारा हैं, तुम कल्पना ही नहीं कर सकते कि वो हिन्दी में लिखेंगी। भले ही उनकी एक-एक रोटी हिंदी की फिल्मों से ही आती है। पर किताब उनकी अंग्रेज़ी में आएगी। पढ़ने वाले भी अंग्रेजी की किताबें पढ़ रहे हैं। नीलसन की लिस्ट निकलती है, नीलसन बुक स्कैन, जिसमें देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली पाँच सौ किताबों की सूची होती है। उन पाँच सौ किताबों में साढ़े तीन सौ किताबें अंग्रेज़ी की होती हैं। कहने को हम कहते हैं कि देश में मुश्किल से पाँच प्रतिशत लोग हैं जो अंग्रेजी पढ़ सकते हैं और बोल सकते हैं, लेकिन बिकने वाली शीर्ष पाँच सौ किताबों में से साढ़े तीन सौ किताबें अंग्रेज़ी की हैं। हिंदी में किताबें छप भी जाएँ तो उन्हें पढ़ कौन रहा है? अभी हमारी 'कर्म' किताब अंग्रेज़ी में आई तो लोगों ने उस पर हल्ला मचाया कि, अरे, हिंदी में नहीं आई, 'कर्म' भी हिंदी में आ रही है, अभी आने वाले महीनों में बहुत आएँगी। पर बात वो नहीं है, बात यह है कि पहले से जो तीस किताबें हिंदी में हैं, वो तुमने पढ़ीं क्या? वो तुमने नहीं पढ़ीं। क्योंकि हिंदी की दुर्दशा ये है कि हिंदी में किताब उपलब्ध हो भी तो नहीं पढ़ोगे। तो बुकस्टोर वाले भी कहते हैं कि, जब हिंदी पढ़ने वाले लोग ही नहीं हैं तो हम हिंदी का सेक्शन रखे ही क्यों? तो उन्होंने हिंदी का सेक्शन उड़ा दिया। हिंदी पढ़ना माने गँवार कहलाना।

मैं इस देश के भविष्य को लेकर के बड़ा आशंकित रहता हूँ—जो देश अपनी भाषा, अपनी संस्कृति त्याग चुका हो, जिस देश में हीनभावना ज़बरदस्त तरीके से हो, जिस देश की जवान पीढ़ी एकदम कमज़ोर हो गई हो, वह देश पता नहीं कितनी देर तक बचेगा!

वेदांत मर्मज्ञ, लेखक, पूर्व सिविल सेवा अधिकारी
संस्थापक प्रशान्त अद्वैत फाउंडेशन

गुजरात चुनाव : आप के प्रवेश से रोचक मुकाबले की सूरत

अशोक उपाध्याय

गुजरात विधानसभा चुनावों की तारीखों का ऐलान हो गया है। एक और पांच दिसंबर को दो चरणों में मतदान होगा। यह भी कि गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश के चुनाव परिणाम एक साथ आठ दिसंबर को घोषित होंगे। खास बात यह कि हर बार की तरह इस बार चुनाव में सिर्फ कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के बीच मुकाबला नहीं होगा। इस बार आम आदमी पार्टी (आप) भी इस राज्य से अपनी किस्मत आजमाने जा रही है। तीनों दलों ने उम्मीदवारों की चयन प्रक्रिया तेज कर दी है। अब तक के चुनावी इतिहास को देखें तो मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच होता रहा है और यहां के स्थानीय मुद्दे ही चुनावों में ज्यादातर हावी रहे हैं।

गुजरात का यह चुनाव भारतीय जनता पार्टी के लिए काफी अहम है। वजह एक ही है, गुजरात प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह का गृह राज्य है। भाजपा इस समय केंद्र और गुजरात में सत्ता में हैं और यहां पर भी उसका नारा डबल इंजन सरकार की उपलब्धियों को लेकर आगे बढ़ रहा है। वह दोबारा सत्ता में आने को लेकर आश्वस्त है। वह मानकर चल रही है कि नरेन्द्र मोदी के नाम पर मतदाताओं को रिझाना उसके लिये आसान होगा। चुनाव घोषणा के तुरंत बाद भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि गुजरात में फिर से डबल इंजन की सरकार बनेगी।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा ने चार राज्यों उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में सत्ता में वापसी की लेकिन पंजाब के नतीजों ने राजनीतिक समीकरणों पर फिर से गौर करने पर बाध्य कर दिया। आम आदमी पार्टी को पंजाब में मिली अपार सफलता ने देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस के अस्तित्व को ही चुनौती दे दी है। अब गुजरात में आप, भाजपा को चुनौती देने के लिये ताल ठोंक रही है। दिल्ली विधानसभा में आप पहले से ही काबिज है और पंजाब की जीत ने उसका मनोबल बढ़ा दिया है। वहीं इस बार गुजरात राज्य में आप के प्रवेश ने गुजरात चुनाव और दिलचस्प बना दिया है। आप वहां करो या मरो की मुद्रा में चुनाव लड़ रही है। अरविंद केजरीवाल ने गुजरात चुनाव की घोषणा होते ही गुजरात की जनता से आप को वोट देने की अपील करते हुए कहा कि अगर वे उनको एक मौका देंगे तो वे बिजली, शिक्षा और मुफ्त तीर्थयात्रा की सुविधा देंगे। उन्होंने कांग्रेस के साथ ही भाजपा के हिंदू वोट बैंक में सेंध लगाने की कोशिश की है। केजरीवाल की रुपये के एक तरफ गणेश-लक्ष्मी की तस्वीर लगाने की मांग को कुछ ऐसे ही देखा जा रहा है।

गुजरात में चुनाव को लेकर पिछले कुछ महीनों से राजनीतिक लड़ाई चरम पर है। चुनाव प्रचार में भाजपा और आप ने पहले से ताकत झोंक रखी है।

नरेन्द्र मोदी और अमित शाह के गुजरात दौरे लगातार हो रहे हैं और वे राज्य में विकास एवं स्थिरता को बड़ी उपलब्धि के तौर पर गिना रहे हैं। लेकिन मोरबी हादसे को लेकर विपक्ष हमलावर है। गुजरात विधानसभा में सीटों के लिहाज से आप का इस राज्य में अभी कोई वजूद नहीं है लेकिन जिस तरह से उसके नेता अरविंद केजरीवाल ने पंजाब में मिली आशातीत सफलता को भुनाने के लिये गुजरात का लगातार दौरा किया है, उससे साफ है कि वह पंजाब की तरह वहां भी अपनी पार्टी को कांग्रेस के विकल्प के रूप में पेश करने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं।